भू राजस्व प्रशासन

भू राजस्व सुधार के उद्देश्य:
- उत्पादन वृद्धि
- रैयतों की सुरक्षा
- राजकीय आय में वृद्धि

→ शेरशाह ने अहमद खान नामक अधिकारी को राजस्व प्रशासन के लिये नियुक्त किया। अहमद खान ने हिन्दू ब्राह्मणों की सहायता से भूमि की माप कराई और कृषि भूमि का एक दस्तावेज तैयार किया

→ शेरशाह की भूमि माप की पद्धति जब्ती पद्धति कहलाती थी है। जब्ती पद्धति को टोडरमल पद्धति भी कहते हैं क्योंकि टोडरमल को ही इस प्रणाली का जनक माना जाता है।

→ भूमि माप में शेरशाह ने माप की इकाई के रूप में गज ए सिकन्दरी का प्रयोग किया जो 32 अंगुल या 3/4 मीटर होता था। माप की इकाई के लिए शेरशाह ने जरीब का प्रयोग किया। यह लोहे के कड़े या रस्सी का बना होता था। माप की सबसे छोटी इकाई बीघा तथा सबसे बड़ी परगना को माना गया।

Scanned with CamScanner

→ शेरशाह की भू राजस्व पद्धति है ज़ब्तबाड़ी पद्धति के नाम से प्रचलित थी जिसके अन्तर्गत किसानों से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किये। प्रत्येक किसान को पट्टा दिया जाता और कबूलियत लिखवायी जाती थी। पट्टे में जमीन का प्रकार, स्वामी का नाम आदि स्पष्ट किया जाता ~~था~~ तथा कबूलियत में यह बात स्पष्ट की जाती थी कि सम्बन्धित किसान को कितना राजस्व प्रदान करना है। भू राजस्व अधिकारियों को स्पष्ट रूप से निर्देश था कि वे नियमों का पालन करें।

→ शेरशाह ने जमीन को तीन भागों में विभाजित किया था उत्तम, मध्यम और निम्न

शेरशाह के समय भू राजस्व की राशि क्या थी इस विषय में विवाद है। कानूनगो एवं कुरैशी का मानना है कि कुल उत्पादन का 1/4 थी और वे ~~इस~~ संभवत: शेरशाह के उस फरमान को आधार बनाते हैं जो उसने मुल्तान के गवर्नर हैबत खाँ को दिया था। किन्तु मोरलैण्ड ऐसा नहीं मानते, उनका मानना था कि यह कुल उपज का 1/3 होती थी। परमात्माशरण भी यही मानते हैं निष्कर्षत: शेरशाह के समय भू राजस्व की दर 1/3 थी। भू राजस्व नगद या ~~अ~~ अनाज दोनों में से किसी एक के रूप में विकल्प

Scanned with CamScanner

→ शेरशाह की सफलता इस बात में है कि उसने अनाजों की दर तालिका तैयार कराई, जिसे रय के नाम से जाना जाता है। दर निर्धारण के लिये आस पास के क्षेत्रों के मूल्य को आधार बनाया जाता था। किसानों को यह विकल्प दिया गया था ~~→ किसानों~~ कि वे अनाज या नकद में भू राजस्व अदा कर सकते हैं।

→ भू राजस्व के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के कर भी लिये जाते थे। भूमि माप के अधिकार एवं राजस्व वसूल करने वाले अधिकारी को वेतन देने के लिये जरीबाना और मुहसिलाना नामक कर लगाया जाता था। जरीबाना उत्पादन का 2.5 प्रतिशत जबकि मुहसिलाना उत्पादन का 5 प्रतिशत होता था।

→ इसके अतिरिक्त ~~अकाल से भी मुकाबला था कि~~ अकाल से निपटने के लिये 2.5 सेर प्रति मन अनाज राजकीय गोदाम में सुरक्षित रखा जाता था। इसकी सूचना हमें हसन खाँ से प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner